P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 VOL-6* ISSUE-8* (Part-1) April- 2019
E: ISSN NO.: 2349-980X **Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika**

संगीतविद् रूहेले नबाब रज़ा अली खाँः व्यक्तित्व एवं कृतित्व

अंकिता
असिस्टेन्ट प्रोफेसर
संगीत (गायन) विभाग,
राजकीय महिला स्नातकोत्तर महाविद्यालय, रामपुर
भारत

सारांश

संगीतविद् नबाब रज़ा अली खाँ उत्तर प्रदेश के रूहेलखण्ड क्षेत्र की रामपुर रियासत के नबाब थे। रामपुर के नबाबों द्वारा अनेक कलाकारों को आश्रय दिये जाने के कारण वहाँ के नबाबों ने भी कलाकारों द्वारा संगीत शिक्षा ग्रहण की। नबाब रज़ा अली खाँ भी संगीत के विविध पक्षों के ज्ञाता तथा विद्वान थे। क्रियात्मक पक्ष के साथ–साथ शास्त्र पक्ष व साहित्य का भी अच्छा ज्ञान था। आपके द्वारा "संगीत सागर" नामक ग्रन्थ पांच भागों में उर्दू व हिन्दी भाषा में लिखा गया। जिसके अर्न्तगत नौहें व लोक जीवन से सम्बन्धित लोकगीत, ख्याल, तराना, चतुरंग, इत्यादि की स्वरलिपियां वर्णित हैं। नबाब रज़ा अली खाँ के व्यक्तित्व व कृतित्व के विषय में उपलब्ध जानकारी संगीत शोधार्थियों व संगीत प्रेमियों के लिये निश्चय ही लाभदायक है।

मुख्य शब्द : रूहेला, नबाब रज़ा अली खाँ, रज़ा लाईब्रेरी, रामपुर, नौहा, खड़ताल, स्वरलिपि, लयकारी।

प्रस्तावना

संगीत साधना करने वाले अनेक संगीतविद् जिनके विषय में आज का युवा अनभिज्ञ है। चूँकि संगीत का क्षेत्र अत्यन्त व्यापक है तो विद्यार्थियों व संगीत में रूचि रखने वालो को सभी संगीतज्ञों, संगीत साधकों के विषय में जानकारी प्राप्त करने में कठिनाई का सामना करना पड़ता है। इस शोध पत्र के द्वारा अनेक संगीतविदों में से एक रूहेले नवाब रज़ा अली खां के व्यक्तित्व व कृतित्व का उल्लेख कर उनको लाभावन्ति किया जा सकता है।

संगीतविद् रूहेले नवाब रज़ा अली खां नवाब फैज़ुल्ला खां के वंशज थे। नवाब फैज़ुल्ला खां द्वारा सन् 1774 ई0 में रामपुर रियासत की स्थापना की गई जो रूहेलखण्ड क्षेत्र के अन्तर्गत आती है। रामपुर के नवाब संगीत प्रेमी थे। उनके शासनकाल में अनेक कलाकारों को आश्रय प्रदान किया गया।

संगीतविद् रूहेले नवाब रज़ा अली खां को संगीत से अत्याधिक लगाव था आप बहुमुखी प्रतिभा के धनी व्यक्ति थे। संगीत साहित्य के साथ–साथ तलवार बाजी तथा तैराकी में भी नबाब रज़ा अली पारंगत थे।

आपके शासनकाल में भी अनेक कलाकारों को आश्रय प्रदान किया गया था जिससे लाभावन्ति हो आपने संगीत की विभिन्न विधाओं में शिक्षा ग्रहण की तथा 'संगीत सागर' नामक ग्रन्थ की रचना की। जिसकी पाण्डूलिपि रज़ा लाइब्रेरी, रामपुर में उपलब्ध है। नवाब रज़ा अली खां के विषय में अध्ययन के उपरान्त अनेक संगीत संबंधी उपयोगी जानकारी उपलब्ध की जा सकेगी।

अध्ययन का उद्देश्य

संगीतविद् नवाब रज़ा अली खां द्वारा वर्णित संगीत संबंधी जानकारी को सर्वसुलभ कराना।

शोध प्रविधि

रामपुर रज़ा लाइब्रेरी में उपलब्ध ग्रन्थों व पुस्तकों का अध्ययन ।

परिणाम

नवाब रज़ा अली खां का जन्म 17 अक्टूबर सन् 1906 ई0 को हुआ था। आप नवाब हामिद अली के पुत्र थे। 30 जून सन् 1930 ई0 को आप रामपुर के नवाब बने।

P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 VOL-6* ISSUE-8* (Part-1) April- 2019
E: ISSN NO.: 2349-980X **Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika**

रूहेला राजवंश के नवाबों की वंश–परम्परा

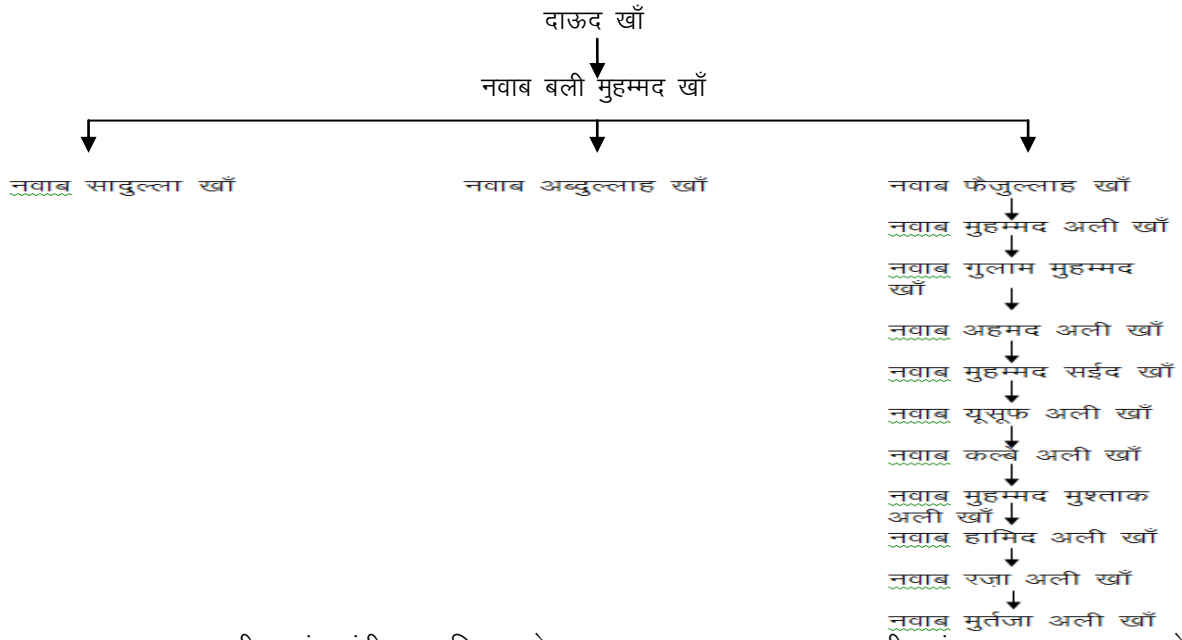

नवाब रज़ा अली खां संगीत साहित्य के साथ–साथ तलवारबाज़ी तथा तैराकी में भी पारंगत तथा एक कुशल सैनिक थे। आप ब्रिटिश सेवा में मेजर जनरल के पद पर थे। जनता के कल्याण के लिए इनके द्वारा सदर चिकित्सालय, तपेदिक चिकित्सालय, यूनानी चिकित्सालय तथा सैनिक चिकित्सालय आदि का निर्माण किया गया शैक्षिक विकास के लिए भी शिक्षण संस्थाएं खुलवायी गयी।

संगीत की अमूल्य परम्परा की रक्षा करके उसे जीवित रखने के प्रति दृढ़ संकल्प रामपुर रियासत के नवाबो का नाम संगीत के इतिहास में स्वर्णाक्षरों में अंकित है।[1]

नवाब रज़ा अली खां संगीत के विविध पक्षों के ज्ञाता तथा विद्वान थे। पांच वर्ष की आयु से ही अपनी रियासत के श्रेष्ठ कलाकारों के द्वारा संगीत शिक्षा लेना प्रारम्भ कर दिया था। पद्मश्री पं0 अयोध्या प्रसाद जी "पखावज" से गंडा बंधवाकर पखावज सीखना प्रारम्भ किया और ताल के विषय में पूर्ण जानकारी प्राप्त की। आपने राग–रागिनियाँ आदि उस्ताद मोहम्मद हुसैन खां (गायक) तथा उस्ताद इनायत हुसैन खां (गायक) द्वारा सीखी। नवाब साहब को संगीत के क्रियामक पक्ष के अतिरिक्त शास्त्र पक्ष तथा साहित्य का भी अच्छा ज्ञान था। आपने अपने पिता के दरबारीं गायको, वादकों तथा शास्त्रकारों इत्यादि से उनकी कला सीखी। आपने विष्णु नारायण भातखण्डे जी (संगीत शास्त्रकार) से संगीत की स्वरीलपि पद्धति की भी जानकारी प्राप्त की।

नवाब साहब तत्वाद्यों में सितार, सरोद, वीणा, सुरसिंगार, रबाब सुषिर वाद्यों में अलगोजा, घनवाद्य के अन्तर्गत जलतरंग , काष्टतरंग, खड़ताल, अवनद्य वाद्य के अन्तर्गत तबला, पखावज इत्यादि गायन के अन्तर्गत ख्याल, ठुमरी, टप्पा, गीत, गज़ल, भजन, चतुरंग व तराना एवं नृत्य कला में निपुण थे।

नवाब रज़ा अली खां खडताल बजाया करते थे और उसमें लयकारियाँ भी दिखाते थे। खड़ताल में आप विशेष ज्ञान रखते थे, आपके खड़ताल के रिकॉर्ड लखनऊ, दिल्ली, रामपुर आकाशवाणी केन्द्रों पर आज भी उपलब्ध है।

अपने ग्रन्थ 'संगीत सागर' में नवाब साहब ने स्वयं लिखा है कि "मेरे अहद–ए दरबार में पं0 कुदऊ सिंह जैसे मृदंगवादक मौजूद है और सेनीय घराना जो तानसेना के वंशज है, सदारंग परम्परा और आनुवांशिक परम्परा के वंशज वहीद खां वीणाकार व अमीर खां भी मेरे वालिद के अहद में रहे। पं0 अयोध्या प्रसाद के बुजुर्ग और दबीर खां साहब बीनकार के बुजुर्ग कई शताब्दी पूर्व से ये जोड़ी मेरे दरबार में मौजूद है ये मुझे फक्र है।

आपके दरबार में गायन, वादन तथा नृत्य के प्रसिद्ध व बेजोड़ कलाकार थे। जिनके नाम इस प्रकार है– मुश्ताक हुसैन खां (गायक) , अच्छन महाराज (नर्तक), लच्छू महाराज (नर्तक) , पं0 अयोध्या प्रसाद (पखावजी), वहीद खां (सितार वादक), उस्ताद सादिक अली खां(सितार वदक), उस्ताद सादिक अली खां (बीनकार), अहमद जान खां थिरकुवा (तबला वादक), सलामत हुसैन खां (गायक) , शब्बन खां (तबला वादक), मसीत खां (तबला वादक) , आचार्य कैलाश चन्द्रदेव बृहस्पति (शास्त्रकार, गायक)

स्वरलिपियों का एक अनूठा संग्रह 'संगीत सागर' के रूप में जो पाँच भागों में उपलब्ध है उसकी रचना हिन्दी तथा उर्दू भाषा में नवाब साहब द्वारा की गई। संगीत सागर में तत्कालीन गीत शैलियों का उल्लेख किया गया । जिसमें मुजरा , झूला ,बधाई, सेहरा, रंग, इत्यादि प्रमुख थे। इसके अतिरिक्त चतुरंग, तराना गायन शैली का भी उल्लेख मिलता है।

नवाब साहब ने ईश्वरीय भक्ति को अधिक प्राथमिकता दी। आप भले ही मुस्लिम सम्प्रदाय के

अनुयायी थे। परन्तु आपने एकेश्वरवाद को मानते हुए खुदा व ईश्वर में कोई भेद नही समझा जो उनको रचनाओं से भी स्पष्ट होता है।

नबाब साहब को संगीत से विशेष प्रेम था और बहुत सी स्वरचित रचनायें जो आप गाया करते थे। उनका संकलित रूप ग्रन्थों व पुस्तक के माध्यम से आज भी हमारे पास है आज भी हमारे पास रज़ा लाइब्रेरी, रामपुर मे उपलब्ध है, जिसमें उन्होंने ख्याल , ध्रुपद, धमार, नौहें, होली गीत इत्यादि को स्वरलिपिबद्ध करके लिखा है।

नबाब रज़ा अली खां द्वारा रचित संगीत ग्रन्थ 'संगीत सागर' निम्नवत् हैं–

संगीत सागर (प्रथम खण्ड)– हिस्सये अव्वल..... . प्रथम भाग में 18 रागों का वर्णन है। इन रागों में अनेक गीत शैलियों को लिपिबद्ध तथा तालबद्ध करने के लिए तीन ताल व कहरवा का प्रयोग किया गया है।

प्रथम खण्ड में प्रयुक्त 18 रागों के नाम इस प्रकार है– 1 मालकौस 2 बिहाग 3 केदारा 4 हमीर 5 भैरवी 6 छाया 7 माँड़ 8 खम्माच 9 कामोद 10 कालींगड़ा 11 तिलंग 12 परज 13 देस 14 जिला 15 श्री 16 बागेसरी 17 जोगिया तथा 18 झिंझोटी।

नबाब रज़ा अली खां साहब ने राग मालकोष में मुजरा "चमका चमका गगन का तारानवी पधारा" ताल कहरवा में निबद्ध किया है। इसी तरह अन्य रागों मे मुजरा लिखा है। इसके अतिरिक्त एक नौहा राग भैरवी में भी लिखा है। जिसके बोल है– "करबल बन में बानो दुखिया खड़ी पछाड़े खावत है।"

द्वितीय खण्ड

हिस्सये दोयम इस भाग में 19 राग लिखे गये है। जिनमें चौताल, कहरवा, सूलफाक , तिताला, एकताला, रूपक, पंजाबी सात तालों का प्रयोग किया गया है। रागों के नाम निम्न प्रकार हैं– शहाना, रामकली, झिंझोटी, बिहाग, कोकब, भीमपलासी, धुनजंगला, पीलू, जोगिया, मालकोश, मुल्तानी, शंकरा, खम्माच, सुघराई, हमीर, गारा, पूरिया, धनाश्री, बहार तथा तिलक कामोद।

द्वितीय खण्ड में नबाब साहब ने अधिकांश विवाहोत्सव पर गाये जाने वाले गीतों का उल्लेख किया है। राग भोपाली में सेहरा "सखी री गूँधो सेहरा, मनाये खुशियाँ" तिताला ताल में निबद्ध किया है। इसी प्रकार कई अन्य रागों में भी सेहरा स्वरलिपि बद्ध किये है।

तृतीय खण्ड

हिस्सये सोयम इस भाग में 22 रागों का वर्णन किया गया है। गारा, दरबारी, माँड, जंगला, भैरव, झिंझोटी, खम्माच, नटमल्लार, देस, बिहाग, धानी, काफी, नबाब रज़ा अली खाँ द्वारा रचित कुछ स्वरलिपियाँः– भीमपलासी, संकरा, पीलू, बंगाला, बरवा, सारंग, भैरवी, कोकब, तिलक कामोद आदि रागों पर कहरवा, आड़ा चौताल, तिताला, रूपक , एकताला इत्यादि तालों का प्रयोग किया गया है।

तृतीय खण्ड में बच्चे के जन्म के समय गाये जाने वाले गीतों का वर्णन अधिकांश किया है। जिनमें संथई, पालना, झूला, छटी, पलंगकसाई, मँगनी, सुहाग , ईदी, सदका, मुबारकवाद, जच्चागीरी बधावा, नारियल तोड़ना, पहिलाव्रत, शरबत इत्यादि गीतों को स्वरलिपिबद्ध तथा तालों में निबद्ध किया गया है।

चतुर्थ खण्ड

हिस्सये चहारूम इस भाग में जिन रागों का उल्लेख किया गया है। उनके नाम इस प्रकार है– धनुजिला, अल्हैया बिलाबल, गारा, खम्माच, देस मांड, भैरवी, बैसवाड़ा, कामोद, संकरा, तिलक कामोद, शुद्धकल्याण, झिंझोटी, बिहाग, बसंत, एमनकल्याण, गौड़सारंग, नटममल्लारी, सिंदूरा, कोकब, बिलाबल, मियां की तोडी, जौनपुरी, तोड़ी, बिलासखानी तोड़ी, देसी तोड़ी, गांधारी तोड़ी, धानी, लाचारी तोड़ी, परज, दरबारी कान्हडा, जिला , बंगाल बिलाबल, हिंडोल, वृदावनी सारंग, मुल्तानी तोड़ी, रत्वाई, श्याम कल्याण, हमीर कल्याण, हेम कल्याण, बागेश्री, बरवा, छाया, तिलंग, दरबारी।

इस भाग में उपर्युक्त रागों का जिन तालों की संगति के लिये प्रयोग किय गया है उनके नाम कहरवा, एकताल, तिताला, रूपक , चाचर , झपताला, चौताला, आड़ा चौताल, सूलफाक ताल, दादरा इत्यादि ताल है। चतुर्थ खण्ड में नबाब साहब ने जिन गीतों का उल्लेख किया है उनके नाम इस प्रकार हैं– इमाम जामिन, मंगनी, भातदेना, रंग, समधन का इस्तकबाल, माँझेबिठाना, सुहाग, सेहरा, मेंहदी लगाना, सेहरा इस्तकबाली, बारात का आना, बधाई, रूखसती के वक्त का सेहरा बारात वापसी का , रस्में रतवाई , चाला, हिन्डोला, रतजगा, भजन, जूता चुराना तथा शादियाना इत्यादि।

पंचम खण्ड

हिस्सये पंजुम इस भाग में जिन रागों का प्रयोग किया है। उनके नाम वृंदावनी सारंग, भैरवी, एमन कल्याण, तिलक कामोद, खम्माच, बागेश्वरी, देस मालकोष, आसावरी, भोपाली, परज, झिंझोटी, नटमल्लारी, रतवाई, काफी, भैरव, सोहा, जंगला पीलू है। जिन तालों का प्रयोग किया गया है। उनके नाम तिताला, कहरवा, पंजाबी, रूपक, झपताला इत्यादि है।

पंचम खण्ड में चौतुका, तराना , सावन , टप्पा, इत्यादि का वर्णन किया गया है।

मुजरा
(बतकरीबे जश्ने मीला दुलनवी)

राग–मालकोष **ताल–कहरवा**

आस्ताई
चमका चमका गगन का तारा नवी पधारा
मन्जा
खिल के मन का कमल पुकारा नवी पधारा
अन्तरा
(1) नाश भई सब अग्नी पूजा
गिरा किसरा का द्वारा नवी पधारा
(2) आज बुतों ने सीस नवाया 'रज़ा' ने पाया सहारा नवीं पधारा[2]

P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 VOL-6* ISSUE-8* (Part-1) April- 2019
E: ISSN NO.: 2349-980X **Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika**

स्वरलिपि

राग–मालकोष **ताल–कहरवा**

	1	2	3	4	5	6	7	8
	धा	गे	ना	ते	ना	के	धे	नि
आस्ताई								
	0	0	सा	सा	नी	धा	0	सा
	म	0	गा	मा	गा	0	सा	0
	0	सानी	धा	नी	सा	0	मा	0
मंजा	0	0	मा	धा	नी	सा	0	गा
	सा	नी	धा	मा	गा	मा	गा	सा
	0	सानी	धा	नी	सा	0	मा	0
अंतरा								
	1	2	3	4	5	6	7	8
						मा	धा	नी
	स	0	सा	0	0	मा	गा	मा
	गा	सा	नि	धा		गा	सा	ग
	सा	नी	धा	मा	गा	मा	गा	सा
	0	सानी	धा	सा	0	मा	0	
	0	0						

नौंहा

(छरहाले हजरते अली असगर)

राग–भैरवी ताल–कहरवा

1 रकबल बन में बानों दुखिया खड़ी पछाड़े खावत है, रेन अंधेरी वाले असगर माता तेहरी बुलावत है,
2 देस छोड़ परदेस बसाया सुहाग चन्द को गहन लगाया, अब तुम बिन मुझ कोख उजडी को बिरहा अगन जलावत है,
3 सेनापति ने सैना खोई जीवन खेती बन में बोई, कोऊ नहीं रखबाला जेनब उजड़ा खेत रखाबत है।
4 बाँके अकबर कासिम बीरन तोड़ गये सब रक्षा बन्धन, जाके कारन आये सकीना कानन रक्त बहावत है।
5 रजा नवी की देवे दुहाई, घोर घटा अब दुखकी छाई।[3]

स्वरलिपि

राग–भैरवी **ताल–कहरवा**

	1	2	3	4	5	6	7	8
	धा	गे	ना	ते	ना	के	धे	नि
आस्ताई								
	0	पा	पा	पा	पा	पा	गामा	पाधा
	0	धा	पा	मा	गा	सा	सागा	मा
	0	गा	रे	गा	रे	सा	धा	नी
	स	0	सा	सा	धानीसा	रेसानि	धापामा	गारेसा
न0–($1^1/_2$)								
	0	सा	गा	गा	मा	0	मा	0
	0	पा	0	धा	नी	सा	सा	0
	0	धा	पा	मापा	गा	0	पा	धा
	स	0	सा	सा	धानीसा	रेसानी	धापामा	गारेसा
न0–(2)								
	0	मा	धा	नी	सा	0	सा	सा
	0	गा	रे	गा	सा	रे	सा	0
	0	सा	गा	गा	मा	0	मा	मा
	0	गा	रे	गा	सा	रे	सा	0
	0	पा	0	धा	नी	सा	सा	सा
	0	सा	नी	सा	पा	धा	पा	0
	0	धा	पा	मापा	गा	0	1	धा
	स	0	सा	सा	धानीसा	नीसारे	धापामा	गारेसा

P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 VOL-6* ISSUE-8* (Part-1) April- 2019
E: ISSN NO.: 2349-980X **Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika**

संथई

(बतकरीबे विलादत नवाबज़ादी
नाहीद ल़क़ा बेगम साहिबा तूलउम्रहा)

राग–गारा **ताल–कहरवा**

आस्ताई संथई चढ़ाने लाई है ननदी
मन्ज बीरन दुआर अब आई है ननदी
अन्तरा (1) ननदें भावज से मान माँगता है
भावज कहें लो इतराई है ननदी
(2) 'रजा पिया' यूं खुश खुश कहत है
भतीजी देख मुस्काई है ननदी।[4]

स्वरलिपि

राग–मालकोष **ताल–कहरवा**

	1	2	3	4	5	6	7	8
	धा	गे	ना	ते	ना	के	धे	नि
आस्ताई								
	0	नी	सा	रे	सानी	सा नी धा		
	0	मा	नीधा	नी	सा	नी	सा	0
मंजा	0	गा	गा	गा	मागा	रेगा	मा	पा0
	मा	मागा	रे	गारे	सा	रे	सानी	सा
अंतरा								
	1	2	3	4	5	6	7	8
	0	गामा	नीधा	नी	सा	नी	सा	0
	0	गा	गा	मागा	रे	गारे	सनी	सा
	0	सा	सानी	सा	सानी	सा	नी	धा
	रे	गारे	सानी	सा	सानी	नी	धा	

सेहरा

(नबाबज़ादी खुरशीद लका बेगम साहिबा)
(20 अप्रेल सन् 1939)

राग–कोकब **ताल–कहरवा**

आस्ताई देखो देखो देखो सेहरे में सूर्य चमकता है
मन्ज सीस पै बरसगाँठ चन्द्र के समान झमकत है।
अन्तरा खुरशीद चहीती है 'रज़ापिया' की
मुखड़ा जिसका कुन्दन सा दमकत है।[5]

स्वरलिपि

राग–कोकब ताल–कहरवा

1	2	3	4	5	6	7	8
धा	गे	ना	ते	ना	के	घे	नि
आस्ताई,							
0	मागा	रे	गा	मा	पा	मा	पा
0	सा	0	सा	सा	0	पा	पा
पा	धा	मा	पा	गा	मा	गारे	ना
मंजा							
0	पा	0	पा	पा	सा	सा	सा
0	गा	रे	सा	गारे	गा	पा	घा

P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 VOL-6* ISSUE-8* (Part-1) April- 2019
E: ISSN NO.: 2349-980X **Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika**

अन्तरा

0	पा	पा	सा	सा	0	सा	सा
0	गा	रे	सा	गारे	गा	सा	0
0	पा	पा	सा	सा	गा	रे	सा
पा	घा	मा	पा	गा	मा	गारे	सा

नारियल तोड़ना

(जिस बहिन की पैदाइश के बाद भाई पैदा होता है उसकी पीठ पर नारियल तोड़ना शगूने नेक़ समझा जाता है।)

राग–तिलक कामोद **ताल–इकताला**

आस्ताई बीरन लाई भगवती बहिन, रीत रचा के काहे लाओ दुल्हन
अन्तरा नरियल नाहीद अंग छुपाओं, नवहर आबिद के गुन गाओ[6]

स्वरलिपि

राग–तिलक कामोद **ताल–इकतारा**

	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
	धिन	धिन	धा	त्रिकिट	तू	ना	कत्त	ता	धागे	त्रिकिट	धिन	धिन
आस्ताई												
						गा	0	मा	गारे	गा	सा	नी
	पा	नी	सा	रे	गा	पा	0	ध	मा	गा	सा	नी
	पा	नी	सा	रे	गा							
अन्तरा												
						मा	मा	पा	नी	0	सा	0
	पा	धापाधापा	मागा	सा	रे	0	गा	सा	0	पा	सा	
	पा	पापाधापा	मागा	सा	पा	पा	धा	मा	गा	सा	नी	
	पा	नी	सा	रे	गा							

बधाई

राग–गोधनी टोरी **ताल–तिताल**

आस्ताई सारा जगत राजन दे तुमको मुबारकबादी
मंजा भूमि से आकाश तक रचि है शादी,
अन्तरा झूम झूम बदरवा आये किरपहु ना बरसाये
मोहित लय में रज़ा ने गोधनी टोरी गादी[7]

स्वरलिपि

1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	16
ता	धिन	धिन	ता	ता	धिन	धिन	ता	ता	तिन	तिन	ता	ता	धिन	धिन	ता
आस्ताई				रे	मा	पा	धा	गा	रे	सा	रे	सा	नी	सा	रे
गागा	0	मा	0												
मंजा				नी	सा	गा	मा	नी	धा	पा	गा	रे	नी	सा	रे
गा	0	मा	0												
अन्तरा				पा	पा	नी	सा	गा	रे	सा	रे	नी	धा	मा	पा
गागा	रे	सा	0	नी	धा	मा	पा	गा	रे	सा	रे	सा	नी	सा	रे
गागा	0	मा	0												

रंग

राग–भैरवी ताल–कहरवा

आस्ताई आई रंग की बहार खेलो खेलो सजन नार
मन्ज हाथन पिचकारी लो संभाल
अन्तरा 1 रंग नदी बहे प्रेम पवन से उमड़े अबीर गुलाल

2 रिफअत बाँटे जड़ाऊ जोड़े बने से साजे सुख पाल
3 रज़ा पिया खेले रंग पुत्र का परजा कहे जिये लाल।[8]

स्वरलिपि

राग–भैरवी **ताल–कहरवा**

	1	2	3	4	5	6	7	8
	धा	गे	ना	ते	ना	के	घे	नि
आस्ताई,								
			पा	धा	मापा	0गा	0	मा
	पा	0	पा	धा	मा	पा	गा	मा
	पा	0						
					गा	0गा	0	मा
	गारे	गा	सा	रे	सा			
						गा	0	सा
	सा	0	सा	सा	0	सा	नी	सा
	पा	धा	धा	0	0	सारेगा	सा	धा
	पा	गा	सा	रे	सा			

भजन

राग–छाया ताल–कहरवा

आस्ताई जग के रखवाली तोरे बलिहारी सुन ले हमारी
मंजा क्यों ना दया की आस लगाएं, तू है दाता हम है भिखारी,
अन्तरा (1) सिगरी रैन तोरे गुन गाए जाग–जाग बढ़ाये मन जगाये
भोर होत सारे संसारी बजाये लीला मुरली तिहारी
(2) "रजा पिया" पै किरपा कीन्यो आशा फल से मन भर
नित सुख दीन्यो हमने तोरी बांट निहारी तुने रख ली लाज हमारी[9]

स्वरलिपि

राग–छाया **ताल–कहरवा**

	1	2	3	4	5	6	7	8
	धा	गे	ना	ते	ना	के	धे	नि
आस्ताई								
	सा	सा	0	सा	ध	0	पा	0
	0	गा	रे	गा	मा	0	पा	0
	गा	गा	0	मा	रे	0	सा	नी
मंजा								
	0	सा	0	सा	ध	0	पा	0
	0	सा	0	सा	रे	0	पा	0
	0	सा	0	सा	धा	0	पा	0
	0	गा	गा	मा	रे	0	सा	नी

शादियाना

राग–बैसवाड़ा ताल–कहरवा

आस्ताई आज रची है शादी गावो बधाई
मन्ज देखो अप्सरा मडली गगन से आई
अन्तरा (1) जोडे संग पहना अंग मे गहना गोरे माथे पै चन्दन बिन्दी भाई,
(2) पायल घूमे घुंघरू झूमे, नागन समान उनमत्त लहराई,
(3) सुरीला गरवा सुन्दर पहरवा, इन्दरसभा गत देख लज्जा लजाई,
(4) रीति मनाके बधाई गाके, रजा पिया को न्यारी छवि दिखाई। [10]

स्वरलिपि

राग–बैसवाड़ा **ताल–कहरवा**

	1	2	3	4	5	6	7	8
	धा	गे	ना	ते	ना	के	धे	नि
आस्ताई							सा	नी
	सा	गा	0	गा	गा	रे	सारे	मा
मंजा							सा	नी
	पा	नी	0	नी	सा	0	रे	0
अंतरा								
						सारे	मा	पा
	पा	0	पा	पा	0	मा	मा	पा
	मापा	धापामापा	मा	मा	गा	0	सा	नी
	पा	नी	0	नी	सा	0	रे	0
	सारे	0	सारे	गा	गा	सा	0	

चतुरंग (चौतुका)

राग–वृन्दावनी सारंग ताल–तिताला

(सम) (सम)

आस्ताई आओ सुनाएं चतुराई से चतुंरग, गाए सरगम सुन परन गुन मृंदग
साजे तराना नाचे ततकार तिरवट संग

अन्तरा (समदूनी) (सम)

मा पा नी सारे सारे मारे मारे सानी पा, किड धेत्त, धा धता कता धा कितान धा किड् नग धेत धुम किट तक धुम किट तक धा जमाएं रंग

भोग (सम) (सम)

ता दा रे ना ना ना दिर दिर ना ना तोम तोम ता दीरे ता दारे ना ता धिन ना गिद गिन धा धा गिद गिन धा गिद गिन धा जमाए रंग

आभोग (सम)

ता थेई तत् थेई थेई तत् ता थेई थेई थेई तत् तत् ता थेई थेई तत् तत्

(सम)

थेई थेई ता 'रजा पिया' गागर मे सागर भर दीनो ज्यू मन उमंग। [11]

स्वरलिपि

1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	16
ता	धिन	धिन	ता	ता	धिन	धिन	ता	ता	तिन	तिन	ता	ता	धिन	धिन	ता

आस्ताई

सा	सा	0	सा	नी	पा	मा	पा	मा	रे	0	मा	रे	सा	रेमा	पानी
मी	पा	0	नी	पा	मा	रे	मा	रे	सा	0	सा	रे	मा	पा	0
सा	नी	0	पा	नी	सा	रे	सा	रेसा	मारे	पामा	नीपा	सानी	सापा	नीमा	मा

अन्तरा

मापा	नीसा	रेसा	नीसा	रेमा	रेसा	नीसा	नीधा	पा	रे	0	सा	नी	पा	मा	रे
सा	नी	0	पा	नी	सा	रे	सा	रेसा	मारे	पामा	नीपा	सानी	सापा	नीमा	पा

भोग

सा	नी	0	पा	मा	पा	नी	सा	सानी	रेमा	सारे	नीसा	सानी	मापा	रेमा	रेसा
सा	नी	0	पा	नी	सा	रे	सा	रेसा	मारे	पामा	नीधा	सानी	सापा	नीमा	पा

आभोग

नी	मा	0	पा	नी	सा	रे	सा	रेमा	पानी	रेमा	रेसा	रेमा	पामा	रेसा	रेसा
सा	नी	0	पा	नी	सा	रे	सा	रेसा	मारे	पामा	नीपा	सानी	सापा	नीमा	पा

P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 VOL-6* ISSUE-8* (Part-1) April- 2019
E: ISSN NO.: 2349-980X **Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika**

तराना

राग–भैरवी ताल–तिताल

आस्ताई दीम दीम ताना ना ना ता ना नाना दीम दीम ता ना ना ना ता ना दीम तोम त ना दीम ता ना ना ना ता ना ना ना ना।

अन्तरा ता ना ना ना ना दीम दीम ता ना ना ना ना तोम तोम ता ना ना ना ता ना ना ना ना दीम दीम धुमकिट तक धुमकिट तक तक तक धा ता ना ना ना ता ना ना ना ना।[12]

स्वरलिपि

राग–भैरवी ताल–तिताल

1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	16
ता	धिन	धिन	ता	ता	धिन	धिन	ता	ता	तिन	तिन	ता	ता	धिन	धिन	ता
आस्ताई															
पा	पा	0	धा	पा	मा	पा	0	0	0	0	धा	पा	मा	गा	मा
पा	पा	0	धा	पा	मा	पा	0	0	0	गा	मा	गा	रे	सा	0
धा	नी	सा	0	0	0	0	रे	सा	नी	धा	धा	पा	मा	गा	मा
अन्तरा															
							पा	गा	मा	धा	नी	सा	सा	0	गा
ग	मा	गा	रे	सा	सा	0	रे	सा	नी	सा	0	0	0	0	धा
पा	मा	गा	मा	पा	धा	0	0	गा	रे	सा	धा	पा	गा	रे	सानी
सा	0	0	रे	सा	नी	सा	0	0	0	0	धा	पा	मा	गा	

निष्कर्ष

इस शोध कार्य द्वारा रूहेले नवाबों की वंश परम्परा की जानकारी तथा संगीतविद् रूहेले नवाब रज़ा अली खां के जीवन तथा संगीत में उनके योगदान की जानकारी प्राप्त हुई। 'संगीत सागर' ग्रन्थ के अध्ययन से विभिन्न लोकगीतों, ख्याल, तराना, चतुरंग, अप्रचलित रागों, तालों व स्वरलिपियों इत्यादि की जानकारी भी प्राप्त हुई जिनके विषय में हम अनभिज्ञ थे। इस ग्रन्थ द्वारा उपलब्ध जानकारी अवश्य ही संगीत विद्यार्थियों शोधार्थियों के लिए लाभप्रद रहेगी।

संन्दर्भ ग्रन्थ सूची

उत्तर प्रदेश के रूहेलखण्ड क्षेत्र की संगीत परम्परा डॉ. संध्या रानी शाक्य

संगीत सागर प्रथम भाग –नवाब रज़ा अली खां पृ01

संगीत सागर प्रथम भाग –नवाब रज़ा अली खां पृ024

संगीत सागर द्वितीय भाग–नवाब रज़ा अली खां पृ0 1

संगीत सागर द्वितीय भाग –नवाब रज़ा अली खां पृ015

संगीत सागर तृतीय भाग –नवाब रज़ा अली खां पृ032

संगीत सागर चतुर्थ भाग –नवाब रज़ा अली खां पृ046

संगीत सागर चतुर्थ भाग–नवाब रज़ा अली खां पृ0 9

संगीत सागर चतुर्थ भाग –नवाब रज़ा अली खां पृ0 78

संगीत सागर चतुर्थ भाग –नवाब रज़ा अली खां पृ081

संगीत सागर पंचम भाग –नवाब रज़ा अली खां पृ01

संगीत सागर पंचम भाग –नवाब रज़ा अली खां पृ0 2